जवाहर विस्तार दर्पण

संचालनालय विस्तार सेवायें
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

जुलाई-सितम्बर 2018 | त्रैमासिक समाचार पत्रिका | वर्ष-02 अंक-08

इस अंक में

- विस्तार संचालनालय की गतिविधियाँ
  - 25वीं आंचलिक कार्यशाला
  - प्रशिक्षण
  - वैज्ञानिक परामर्शदात्री बैठक
  - सीड हब कार्यशाला
  - कृषक सलाह हेतु नाइस पर कार्यशाला
- कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ
- रबी फसलों हेतु तकनीकी सलाह

संरक्षक
प्रो. प्रदीप कुमार बिसेन
कुलपति
ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर

मार्गदर्शक
डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता
संचालक विस्तार सेवाएं
ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर

प्रधान संपादक
डॉ. अर्चना पाण्डे

संपादक मंडल
डॉ. टी.आर. शर्मा
डॉ. संजय वैशंपायन
डॉ. वाय.एम. शर्मा
डॉ. अनय रावत
डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता

निदेशक की कलम से

कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाना एवं कृषकों की आय को दोगुना करना हमारी प्राथमिकता है । कृषक बंधु सदैव प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझते रहते हैं, फलस्वरूप हमारा दायित्व है कि कृषकों को होने वाली आर्थिक क्षति को कैसे कम किया जा सके। इस तारतम्य में कृषि के अतिरिक्त खेतों की सीमाओं पर बॉस रोपण, एजोला उत्पादन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, केंचुआ खाद उत्पादन, दुग्ध उत्पादन, मछली पालन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, मेड़ों पर मुनगा, अरहर तथा गेंदे आदि के रोपण से अतिरिक्त आय कृषक बंधु अर्जित करने में सक्षम होगें ।

फसलों की पैदावार एवं आय अनेक कारकों पर निर्भर करती है जैसे- जलवायु एवं मृदा के अनुसार फसलों का चुनाव, फसल की प्रजाति, बीज दर, बोनी का उचित समय व तरीका, पौध संरक्षण, टपक सिंचाई, शस्य क्रियायें, मृदा परीक्षण उपरांत खाद का उपयोग, कटाई एवं गहाई का उचित समय एवं सुरक्षित भंडारण आदि कारकों का समावेश कर फसलोत्पादन में होने वाली क्षति को कम करने एवं उत्पादन लागत में कमी से ही कृषकों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य हम प्राप्त कर सकेंगे।

डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता
संचालक विस्तार सेवायें

विस्तार संचालनालय की गतिविधियाँ

25वीं आंचलिक कार्यशाला

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय एवं कृषि तकनीक अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-9 जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में कृषि विज्ञान केन्द्रों की 25वीं त्रिदिवसीय आंचलिक कार्यशाला दिनांक 03-05 सितम्बर, 2018 को विश्वविद्यालय में आयोजित की गयी। इस कार्यशाला का उद्घाटन सरस्वती के समक्ष दीप प्रजज्वलन कर सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के 78 कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रमुख वरिष्ठ वैज्ञानिक के साथ-साथ 300 कृषि वैज्ञानिकों ने भाग लिया ।

कार्यक्रम के प्रांरभ में ज.ने.कृ.वि.वि. के कुलगीत एवं कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन के स्वागत संदेश की वीडियो प्रस्तुति की गई। मुख्य अतिथि श्री कुलस्ते जी ने उद्घाटन अवसर पर कहा कि कृषि शिक्षा संकाय में लगातार नई-नई तकनीकों का समन्वय एवं उत्पादन में वृद्धि व विकास आवश्यक है।

उद्घाटन समारोह में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक (कृषि प्रसार) डॉ. वी.पी. चहल, दीन दयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली के डॉ. अभय महाजन, एम.जी.एस.आई. आर.डी. एण्ड पी.आर.के. निदेशक, डॉ. संजय सराफ, छत्तीसगढ़ योजना आयोग के सम्मानित सदस्य डॉ. डी.के. मरोठिया, इंदिरा गांधी कृषि वि.वि., रायपुर के कुलपति प्रो. एस.के. पाटिल

मंचासीन थे। संचालक विस्तार सेवायें डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता के स्वागत भाषण उपरांत कार्यक्रम समन्वयक व अटारी जोन-9 के निदेशक डॉ. अनुपम मिश्रा द्वारा कार्यशाला की जानकारी दी गई। तीन दिवसीय कार्यशाला में 5 तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें सीड हब, दलहनी एवं तिलहनी फसलों का समूह प्रदर्शन, न्यूट्री स्मार्ट विलेज (ग्राम), किसानों की आय दोगुनी करना एवं नीकरा परियोजना के अंतर्गत किये गये कार्यों का प्रस्तुतिकरण किया गया एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा कृषि प्रदर्शनी के माध्यम से कृषि की उन्नत तकनीकी, जैविक खेती एवं क्षेत्र विशेष कृषि तकनीक का प्रचार प्रसार प्रमुखता से

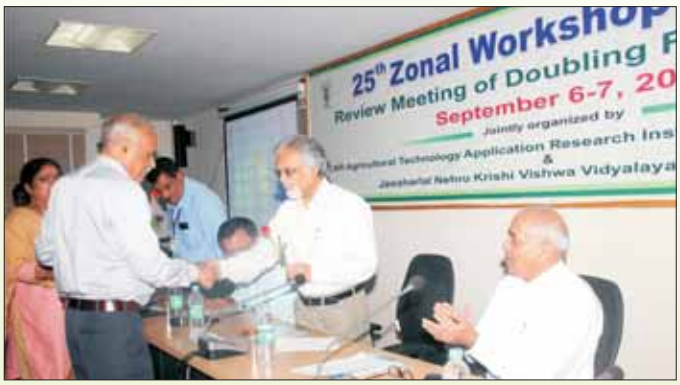

कोऑर्डिनेटर क्रीड़ा हैदराबाद के डॉ. जे.वी.एम.एस. प्रसाद, संचालक अनुसंधान डॉ. धीरेन्द्र खरे, अधिष्ठाता डॉ. आर.एम. साहू, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. व्ही.के. प्यासी सहित अन्य अतिथिगण उपस्थित थे। इस कार्यशाला के समापन अवसर पर कृषि महाविद्यालय, जबलपुर के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई।

प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम (टी.ओ.टी. स्किल डेवलपमेंट)

संचालनालय विस्तार सेवायें, जबलपुर द्वारा दिनाँक 13 से 15 सितम्बर 2018 को प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के कृषि विज्ञान केन्द्रों के 80 वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति की बैठक

कृषि विज्ञान केन्द्रों कटनी, सिवनी, सीधी, रीवा में वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति की बैठक सम्पन्न हुई। कृषि विज्ञान केन्द्रों के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख द्वारा प्रगति प्रतिवेदन एवं आगामी कार्ययोजना को प्रस्तुत किया गया। इन बैठकों में संचालनालय विस्तार सेवायें डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता एवं अन्य वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

सीड हब कार्यशाला संपन्न

दिनांक 16 अगस्त 2018 को विस्तार संचालनालय में सीड हब परियोजना की समीक्षा बैठक ज.ने.कृ.वि.वि. के कुलपति डॉ. पी.के. बिसेन की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। बैठक में दलहन निदेशालय, भोपाल के निदेशक डॉ. ए.के. तिवारी विशेष रूप से उपस्थित थे। बैठक में पांच कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं दो अनुसंधान केन्द्रों की प्रगति की समीक्षा की गयी तथा आगामी कार्य योजना की तैयारी गई।

कृषक सलाह हेतु नाइस पर कार्यशाला

Pro-Soil Project अंतर्गत ICT enabled Advisory Platform "NICE" का क्रियान्वयन नाबार्ड एवं जी.आई.जेड. के सहयोग से किया जा रहा है। इस परियोजना हेतु राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज), हैदराबाद को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा National Consortium Facilitating Agency निर्धारित किया गया है। उक्त परियोजना का क्रियान्वयन पायलट आधार पर मंडला एवं बालाघाट जिले में किया जा रहा है। "NICE" के माध्यम से कृषकों को उनकी समस्याओं के समाधान हेतु एस.एम.एस./फिल्म आदि के माध्यम से सलाह एवं परामर्श प्रदान किया जायेगा। इस पायलट परियोजना की बैठक में श्रीमति ओम गुप्ता, संचालक विस्तार सेवायें ने अपने विचार रखे। विभागीय विकासखंड अधिकारियों द्वारा सप्ताह का कोई भी एक दिन निर्धारित कर मैदानी समस्याओं के समाधान हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से समन्वय स्थापित कर एडवाईजरी तैयार की जायेगी।

मोबाइल एप का विमोचन

जोन-9 के अतंर्गत कृषि विज्ञान केन्द्रों की 25 वीं जोनल वर्कशॉप में ज.ने.कृ.वि.वि. के अधीनस्थ चार कृषि विज्ञान केन्द्रों, जबलपुर, डिण्डोरी, दमोह, मंडला के मोबाइल एप का विमोचन डॉ. व्ही.पी. चहल, सहायक महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, प्रोफेसर पी.के. बिसेन, कुलपति, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, डॉ. अनुपम मिश्रा, निदेशक, अटारी, डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता, संचालक विस्तार सेवायें के द्वारा किया गया। इस एप के माध्यम से कृषक बंधु आपनी खेती से जुड़ी समस्त जानकारी को प्राप्त कर सकते हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर-चने की उन्नत खेती
कृषि विज्ञान केन्द्र, डिण्डोरी-लघु धान्य फसलें
कृषि विज्ञान केन्द्र, दमोह-मेरी खेती
कृषि विज्ञान केन्द्र, मंडला-कृषक महिला उपयोगी उन्नत उपकरण

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, बालाघाट

प्रधानमंत्री द्वारा किसानों से ब्राडकास्टिंग के माध्यम से सीधा संवाद

दिनांक 12 जुलाई 2018 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा कृषकों की आय को दुगनी करने के संकल्प हेतु देश के सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों से सीधे संवाद के तहत बड़गांव, बालाघाट में कृषकों को सीधे प्रधानमंत्री के उद्बोधन से लाभान्वित कराया गया। कार्यक्रम में जिले के सभी विकासखण्डों से लगभग 200 कृषकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री जी ने म.प्र., सिक्किम, उड़ीसा, उ.प्र., कर्नाटक, राजस्थान, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र के उत्कृष्ट कृषकों के अनुभव देश के किसानों के साथ साझा किए तथा माननीय प्रधानमंत्री जी ने टपक सिंचाई, मधुमक्खी पालन, कड़कनाथ मुर्गी पालन, पशुपालन, उद्यानिकी, मूल्य संवर्धन एवं कृषि में सूचना तकनीकी के नवीन प्रयोगों द्वारा कैसे किसान भाई अपनी आय को दोगुना करें, इस पर भी अपनी बात रखी।

राणा हनुमान सिंह जयंती पर कृषक सम्मेलन एवं प्रदर्शनी का आयोजन

स्व.राणा हनुमान सिंह जी की जयंती एवं प्रतिमा अनावरण कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित ''कृषक सम्मेलन सह प्रदर्शनी'' में मुख्य अतिथि माननीय श्री गौरीशंकर जी बिसेन, मंत्री, कृषक कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, म.प्र. शासन ने कृषकों को संबोधित किया । कार्यक्रम के दौरान कृषकों को वर्ष 2020 तक आय दुगनी करने हेतु खेती के साथ-साथ सहायक व्यवसाय जैसे मुर्गी पालन, बकरी पालन, दुग्ध उत्पादन, मछली पालन, रेशम पालन आदि व्यवसाय करने के लिए प्रेरित किया, साथ ही कृषि की उन्नत वैज्ञानिक तकनीक अपनाने हेतु जोर दिया। कार्यक्रम में जिले के लगभग 1600 पुरूष तथा महिला कृषकों ने भाग लिया। इस अवसर पर जिले के सभी विकासखण्डों से एक-एक प्रगतिशील कृषक को शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र तथा रू. 5000/- नगद द्वारा पुरस्कृत किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल

हरियाली महोत्सव

केन्द्र प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. विजय कुमार वर्मा के

मार्गदर्शन में कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल में जुलाई माह को हरियाली महोत्सव के रूप में मनाया। जिसके तहत 26 जुलाई 2018 को वृक्षारोपण के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 200 कृषकों ने भागीदारी की। परिसर में 250 पौधों का वृक्षारोपण किया गया। वृक्षारोपण में जिले के सभी समाचार पत्रों के पत्रकारो, डिप्लोमा कार्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों, रावे छात्राऐं एवं केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने भी वृक्षारोपण किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथियों ने पर्यावरण को बचाने का संदेश दिया।

सोया किसान मेला

कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल में 20 सितंबर 2018 को ''सोया किसान मेला'' का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत सोयाबीन की नवीन तकनीकों प्रसंस्करित उत्पादों की जानकारी देने के लिए कृषक- वैज्ञानिक सम्वाद एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम समापन के अवसर पर डॉ. पी.के. बिसेन, कुलपति ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर, डॉ. टी.पी. सिंह, संयुक्त आयुक्त, कृषि मंत्रालय भारत सरकार, डॉ. पी.के. मिश्रा, अधिष्ठाता, कृषि संकाय, डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता, संचालक विस्तार सेवायें उपस्थित थे। कार्यक्रम में लगभग 1816 म.प्र. एवं सीमावर्तीय राज्यों से किसान, कृषि विज्ञान केन्द्रों के 30 वैज्ञानिक, 96 कृषि विभाग के अधिकारी, 80 कृषि आदान विक्रेताओं ने अपनी

उपस्थिति एवं प्रदर्शनी में अपनी सहभागिता दिखाई। इस कार्यक्रम के दौरान 4 तकनीकी साहित्यों का विमोचन हुआ।

कृषि विज्ञान केन्द्र, छतरपुर

कृषि कल्याण अभियान में कृषि विज्ञान केन्द्र को प्रथम स्थान

नीति आयोग द्वारा मध्यप्रदेश के 8 जिले पिछड़े जिले की सूची में शामिल थे। कृषि कल्याण अभियान के तहत नीति आयोग द्वारा महत्वकांक्षी योजना का देश के 26 राज्यों के 112 पिछड़े जिलों में 1 जून से 15 अगस्त 2018 तक क्रियान्वयन किया गया। इस अभियान में विश्वविद्यालय के अधीन दमोह, सिंगरौली एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, छतरपुर को सम्मिलित किया गया था, जिसके अंतर्गत चयनित क्षेत्र में स्वास्थ्य, शिक्षा, कुपोषण, सिंचाई, कृषि सहित जनकल्याणकारी योजना का सही तरीके से क्रियान्वयन करके पिछड़ापन दूर करने के अहम कदम उठाने के लिए विशेष अभियान चला कर जनता को लाभ पहुंचाया गया। छतरपुर, दमोह एवं सिंगरौली द्वारा लक्ष्य पूर्ती कर शतप्रतिशत अंक हासिल कर प्रथम स्थान अर्जित किया ।

कृषि विज्ञान केन्द्रों पर पदस्थ वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. वीणापानी श्रीवास्तव एवं केन्द्र में पदस्थ वैज्ञानिकों एवं केन्द्र सरकार द्वारा नामित अधिकारियों, समस्त विभागों के विभागाध्यक्ष के संयुक्त प्रयासों से ही लक्ष्य पूर्ति सम्भव हुई। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रदीप कुमार बिसेन, संचालक विस्तार डॉ. (श्रीमती) ओम गुप्ता, अटारी निदेशक डॉ. अनुपम मिश्रा द्वारा केन्द्र की सराहना की गयी ।

कृषि विज्ञान केन्द्र, छिंदवाड़ा

आदर्श पोषण गांव में सुपोषण आहार दिवस का आयोजन

केन्द्र द्वारा दिनांक 14 अगस्त 2018 को आदर्श पोषण गांव बदनूर विकासखंड मोहखेड़ में पोषण आहार दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत डॉ. ध्रुव श्रीवास्तव द्वारा बच्चों एवं महिलाओं हेतु मुनगे से होने वाले स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी

जानकारी प्रदान की गई तथा डॉ. सरिता सिंह द्वारा बच्चों के स्वच्छता संबंधी निर्देश प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम में ग्रामीण महिलाओं को मुनगे एवं करौंदे के पौधे वितरित किए गए। श्री सुंदरलाल अलावा, कार्यक्रम सहायक, कृषि विस्तार द्वारा करौंदे के उपयोग के बारे में जानकारी प्रदान की गई। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा पोषण थाली एवं पौष्टिक सब्जियों का प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम में मोहखेड़ विकासखंड के परियोजना अधिकारी श्री बी.आर. साहू एवं उद्यान अधीक्षक श्री राजकुमार कोरी भी उपस्थित थे।

छिंदवाड़ा जिले में कॉर्न फेस्टिवल (मक्का महोत्सव) का आयोजन

जिला छिंदवाड़ा में देश का प्रथम दो दिवसीय कॉर्न फेस्टिवल (मक्का महोत्सव) दिनांक 29-30 सितंबर 2018 को जिला प्रशासन द्वारा मनाया गया। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में तकनीकी ज्ञान, औद्योगिक संभावनाओं, मनोरंजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं मक्के के व्यंजनों का अद्भुत संगम रहा, जिसमें ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर के माननीय कुलपति प्रो. प्रदीप बिसेन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों के मक्का विषय विशेषज्ञों द्वारा तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया गया। कार्यक्रम के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र, छिंदवाड़ा के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. सुरेन्द्र पन्नासे के मार्गदर्शन में खाद्य वैज्ञानिक डॉ. ध्रुवचंद श्रीवास्तव द्वारा तैयार की गई। मक्के के व्यंजनों की सी.डी. का विमोचन माननीय कुलपति जी द्वारा किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, दमोह

कृषि विज्ञान केंद्र, दमोह के मोबाइल एप 'मेरी खेती' का विमोचन

जोन 9 के अतंर्गत कृषि विज्ञान केंद्रों की 25 वीं जोनल वर्कशॉप में दमोह के मोबाइल एप 'मेरी खेती' का विमोचन डॉ. व्ही.पी.चहल, सहायक महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, प्रोफेसर पी.के. बिसेन, कुलपति, ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर, डॉ. अनुपम मिश्रा, निदेशक, अटारी, डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता, संचालक विस्तार सेवायें के द्वारा किया गया। इस एप के माध्यम से दमोह जिले के कृषक अपनी खेती से जुड़ी समस्त जानकारी प्राप्त कर सकते है।

औषधीय एवं संगधीय फसलों के उत्पादन एवं प्रसंस्करण प्रशिक्षण

कृषि महाविद्यालय, जबलपुर के पौध कार्यकी विभाग के अंतर्गत दमोह जिले में औषधीय एवं संगधीय फसलों के उत्पादन एवं प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन डॉ विभा पाण्डे, प्राध्यापक, कृषि महाविद्यालय के मार्गदर्शन में दिनांक 20 सितम्बर, 2018 को ग्राम भैंसखार में किया गया। जिसमें 20 कृषकों अश्वगंधा का बीज एवं पैंकिंग मशीन प्रदान की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, डिण्डोरी

मधुमक्खी पालन में उद्यमिता विकास पर आठ दिवसीय प्रशिक्षण

केन्द्र में आठ दिवसीय जिला स्तरीय क्षमता विकास/व्यावासायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम ''मधुमक्खी पालन में उद्यमिता विकास'' का समापन श्री पंकज तेकाम के मुख्य अतिथ्य व डॉ. हरीश दीक्षित के मार्गदर्शन में किया गया।

केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. हरीश दीक्षित ने बताया कि स्वीट क्रांति के अन्तर्गत मधुमक्खी पालन को बढ़ावा दिया जा रहा है। कार्यक्रम में प्रशिक्षक के रूप में मधुमक्खी पालन के प्रगतिशील किसान श्री हरिशंकर विश्वकर्मा ने किसानों को मधुमक्खी पालन की व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक जानकारी दी।

इस कार्यक्रम में जिले के मोहगांव, झाकी, धनौली, बुडरूखी, मोहती, बितनपुर, उमरिया (सभी विकासखण्ड समनापुर) धनुवासागार (डिण्डौरी वि.ख.) गपैया (शहपुरा वि.ख.) के 21 प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण में शामिल हुए। कार्यक्रम के आयोजन वैज्ञानिक डॉ. सतेन्द्र कुमार एवं सुश्री निधि वर्मा एवं श्रीमती रेणू पाठक, कार्यक्रम सहायक ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

गाजरघास जागरूकता सप्ताह

केन्द्र एवं कृषि अनुसंधान केन्द्र, डिण्डौरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. हरीश दीक्षित के मार्गदर्शन में दिनांक 16-22 अगस्त 2018 के दौरान ''गाजरघास जागरूकता सप्ताह'' का आयोजन जिले के विभिन्न स्थानों में किया गया। केन्द्र द्वारा जिले में गाजरघास से संबंधित विभिन्न गतिविधियों जैसे गाजरघास को नष्ट करना, जैविक खरपतवार नियंत्रण (मैक्सिकन बीटल) कीड़ों को छोड़ना एवं उखाडे गये गाजरघास से कम्पोस्ट खाद बनाना। कृषि महाविद्यालय (रावे) के छात्रों द्वारा रैली का आयोजन, बैनर

पोस्टरों का प्रदर्शन इत्यादि का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय जबलपुर से ग्रामीण एवं कृषि कार्य अनुभव कार्यक्रम अंतर्गत क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र डिण्डौरी में आये छात्रों ने केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों साथ सक्रिय रूप से भाग लिया। खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर द्वारा गाजरघास से संबंधित आवश्यक विस्तार साहित्य एवं जैविक विधि से गाजरघास नियंत्रण हेतु मैक्सिकन बीटल उपलब्ध कराये गये। कार्यक्रम में वैज्ञानिक डॉ. सतेन्द्र कुमार, डॉ. निधि वर्मा एवं डॉ. प्रणय भारती का सहयोग रहा।

कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदा

श्री ओम ठाकुर, माननीय प्रमंडल सदस्य, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदा का भ्रमण

दिनांक 13 अगस्त, 2018 को जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के माननीय प्रमण्डल सदस्य श्री ओम ठाकुर ने कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदा का भ्रमण कर विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन किया। श्री ठाकुर जी ने केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों के अंतर्गत सीड हब योजना, डेयरी इकाई, प्रजनक बीज उत्पादन कार्यक्रम, टेक्नोलॉजी पार्क, केंचुआं खाद उत्पादन इकाई, नाडेप खाद उत्पादन इकाई, एजोला उत्पादन इकाई, ट्राइकोडर्मा सक्रीयक इकाई, कृषक उपयोगी विभिन्न मशीनों एवं मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला का अवलोकन किया तत्पश्चात् केन्द्र द्वारा किये जा रहे समस्त प्रसार गतिविधियाँ जैसे विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रदर्शन, प्रकाशित तकनीकी लेख, समाचार पत्रों में पहुंच, शोधपत्र आदि का भी छायाचित्रों के माध्यम से विधिवत अवलोकन किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदा की सोया मेला में प्रदर्शनी

20 सितम्बर, 2018 को केन्द्र में आयोजित ''सोया किसान मेला'' में हरदा में उन्नत उत्पादन देने वाली सोयाबीन की प्रमुख किस्मों

की जीवित प्रदर्शनी लगाई गई। सोयाबीन की नवीनतम किस्में जे.एस. 20-98, जे.एस. 20-69, जे.एस. 20-34, जे.एस. 95-60, जे.एस. 20-29 एवं आर.वी.एस. 2001-4 का प्रदर्शन किया। सोयाबीन से निर्मित उत्पाद जैसे सोया बड़ी, सोया आटा, सोया मल्टी ग्रेन आटा, सोया भाखरवड़ी, सोया मठरी, सोया-बेसन लड्डू, सोया सत्तू, सोया बिस्कुट, सोया दूध, सोया टोफू आदि का भी स्टाल लगाकर कृषकों के बीच जानकारी दी गई। कृषि विज्ञान केन्द्र की प्रदर्शनी का माननीय कुलपति, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, प्रो. डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन, अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. पी.के. मिश्रा, संचालक विस्तार सेवायें डॉ. ओम गुप्ता व अन्य गणमान्य अधिकारियों तथा बड़ी संख्या में महिला व पुरूष कृषकों एवं कृषि विद्यार्थियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा भूरि-भूरि सराहना की।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा वेबकास्ट संवाद

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा वेबकास्ट के माध्यम से दिनांक 12 जुलाई 2018 को राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से महिला स्वसहायता समूह एवं महिला कृषकों से संवाद स्थापित किया। कार्यक्रम का प्रसारण केन्द्र द्वारा स्वसहायता समूह की महिलाओं एवं महिला कृषकों को दिखाया गया। माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की स्वसहायता समूह की महिलाओं व महिला कृषकों को कृषि में उनकी भागीदारी हेतु

सराहा व उनको प्रोत्याहित किया कि वे भी उन्नत कृषि के माध्यम से अपनी आय में अभूतपूर्व बढ़ोतरी कर सकते हैं । वेबकास्ट कार्यक्रम में डॉ. डी.पी. शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर ने महिला कृषकों को अपनी आय में वृद्धि करने हेतु उन्नत खेती के साथ उत्पादों के प्रसंस्करण एवं उनके मूल्यसंवर्धन के बारे में भी जानकारी दी। केन्द्र के वैज्ञानिकों डॉ. मोनी थामस, डॉ. ए.के. सिंह, डॉ. सिद्धार्थ नायक व डॉ. अक्षता तोमर ने महिला कृषकों की कृषि में भागीदारी के बारे में चर्चा की।

एन.एफ.एस.एम. के राष्ट्रीय सलाहकार डॉ. बी.एस. पाहिल का भ्रमण

दिनांक 16 जुलाई, 2018 को एन.एफ.एस.एम. के राष्ट्रीय सलाहकार डॉ. बी.एस.पाहिल ने कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर का भ्रमण किया व उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा किये जा रहे एन.एफ.एस.एम. कार्यक्रम का निरीक्षण किया। केन्द्र के प्रमुख डॉ. डी.पी. शर्मा ने केन्द्र द्वारा एन.एफ.एस.एम. अंतर्गत आयोजित विभिन्न समूह प्रदर्शनों के बारे में जानकारी दी। विगत तीन वर्षों में समूह प्रदर्शन दलहन व तिलहन अंतर्गत आयोजित विभिन्न फसल प्रदर्शनों का प्रस्तुतीकरण केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. ए.के. सिंह द्वारा किया गया। उक्त कार्यक्रम में डॉ. मोनी थामस, डॉ. सिद्धार्थ नायक, डॉ. अक्षता तोमर व श्रीमती जीजी ऐनी अब्राहम का सराहनीय योगदान रहा ।

कृषि विज्ञान केन्द्र, कटनी

स्वयं सहायता महिला समूह के साथ माननीय प्रधानमंत्री जी की बातचीत

केन्द्र में दिनांक 12 जुलाई 2018 को स्वयं सहायता महिला समूह के साथ माननीय प्रधानमंत्री जी की बातचीत के सीधा प्रसारण का कार्यक्रम आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न स्वयं सहायता महिला समूह जैसे जयलक्ष्मी, जागृति, दीपक, देविका और शारदा की 32 महिलाओं ने भाग लिया एवं प्रधानमंत्री जी की

बातचीत से लाभान्वित हुई। प्रधानमंत्री जी ने अपने संवाद में सरकारी ई-मार्केटिंग के द्वारा बकरी पालन, मूल्यवर्धन, डेयरी, सौर संयंत्र, फल और सब्जी का प्रसंस्करण में महिला समूहों के काम की सराहना की। स्वयं सहायता महिला समूह को बैंक के माध्यम से वित्तीय सहायता हेतु प्रोत्साहित किया। जिले की प्रगतिशील कृषि महिलाओं ने अपने अनुभव उपस्थित प्रतिभागियों के साथ साझा किया ।

राष्ट्रीय पोषण माह पर कार्यक्रम का आयोजन

डॉ ए.के. तोमर, वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रमुख के दिशा निर्देशन में, प्रत्येक विकासखंड के न्यूट्री स्मार्ट गांव जैसे ग्राम लिंगरी, विकासखंड बहोरीबंद, ग्राम मड़ई, विकासखंड कटनी, ग्राम जमुनियाँ, विकासखंड-रीठी, ग्राम हरैया विकासखंड विजयराघवगढ़, ग्राम महनेर, विकासखंड ढीमरखेड़ा, ग्राम लखाखेड़ा विकासखंड बड़वाड़ा में कार्यक्रमों का आयोजन राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान किया गया । इस अवसर पर खाद्य वैज्ञानिक डॉ. नीलू विश्वकर्मा ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों को पौष्टिक भोजन तथा दैनिक आहार में उसका समावेश करने के लिए प्रेरित करना है जिससे महिलाये एवं बच्चे स्वस्थ हो । कार्यक्रम में टमाटर, बैंगन और मिर्च के पौधे रसोई वाटिका हेतु वितरित किये गए।

कृषि विज्ञान केन्द्र, मण्डला

स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का आयोजन

केन्द्र द्वारा स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के अंतर्गत 15 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2018 तक स्वच्छता हेतु ग्रामीणों में जागरूकता लाने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया, कार्यक्रम के अंतर्गत ग्रामीणों को शौचालय निर्माण हेतु प्रेरित किया गया, सार्वजनिक सड़कों की सफाई, केन्द्र की विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों की साफ-सफाई, स्कूली बच्चों में स्वच्छता जागरूकता हेतु हाथों की साफ-सफाई हाथ धुलाई कार्यक्रम एवं ग्रामीणजनों में जागरूकता हेतु सामूहिक रैली का कार्यक्रम ग्रामीणों द्वारा खाद बनाने हेतु गड्ढों में एकत्रित किये गये अवशिष्ट पदार्थो का जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के जैव उर्वरक विभाग द्वारा तैयार जैविक अवशिष्ट अपघटक द्वारा सामूहिक भागीदारी द्वारा प्रदर्शन किया गया।

स्वच्छता जागरूकता पखवाड़ा कार्यक्रम के समापन पर 2 अक्टूबर 2018 को कृषि विज्ञान केन्द्र मण्डला में कृषक संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया जिसमें लगभग 60 कृषक एवं कृषक महिलाओं की भागीदारी रही। केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. एस.एस. गौतम, डॉ. विशाल मेश्राम, इंजी. आर.के. स्वर्णकार एवं श्री डी.पी. सिंह आदि की उपस्थित रहे।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नरसिंहपुर

कृषि विज्ञान केन्द्र नरसिंहपुर में रावे छात्राओं द्वारा स्वच्छता कार्यक्रम

जुलाई 2018 के प्रथम पखवाड़े में 20 रावे छात्राओं द्वारा केन्द्र एवं अंगीकृत ग्राम सूरजगांव में स्वच्छता अभियान चलाया। इसके अंतर्गत छात्राओं द्वारा केन्द्र पर साफ सफाई की गई एवं सूरजगांव में संपर्क कृषकों को घर व आसपास के क्षेत्र में साफ सफाई रखने का महत्व बताया, छात्राओं द्वारा केन्द्र पर सोयाबीन, धान, अरहर, मूंग की बोवाई की गई एवं सब्जी पौध को लगाया गया। इस

अवसर पर माननीय कुलपति प्रो. पी.के. बिसेन ने छात्राओं को मार्गदर्शन दिया।

दिनांक 12 जुलाई, 2018 को डॉ. आर.एम. साहू, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, जबलपुर, ने सभी रावे छात्राओं को अच्छा कार्य करने हेतु प्रेरित किया व मार्गदर्शन दिया। इस अवसर पर डॉ. पी.सी. मिश्रा, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, पवारखेड़ा होशंगाबाद, डॉ. डी.के. पहलवान, सहसंचालक अनुसंधान जबलपुर, प्रमुख वैज्ञानिक व प्राध्यापक डॉ. ए.के. चौधरी, डॉ. एम.के. अवस्थी, डॉ. पी.बी. शर्मा सहित केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. यतिराज खरे, डॉ आशुतोष शर्मा, डॉ. दीपाली बाजपेई, डॉ. एस.आर. शर्मा आदि उपस्थित रहे।

कृषि विज्ञान केन्द्र, पन्ना

समूह पंक्ति प्रदर्शन

केन्द्र द्वारा वर्ष 2018 खरीफ में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन अंतर्गत समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन तिल का 50 एकड़ में सलैया एवं हरसा गांव में 41 कृषकों के खेतों पर अनुसंशित तकनीक का प्रदर्शन क्रियान्वित किये गये। प्रदर्शन अन्तर्गत उन्नत किस्म टी. के. जी.-308 बिबेरिया, बेसियाना, एजोस्प्रीलिम, पी.एस.बी. स्यूडोमोनास, नींदानाशक आदि सामग्री निःशुल्क कृषकों को प्रदाय की गई। तिल की बुवाई कतार विधि से कराई गई। उड़द का 25 एकड़ में गुखौर गांव में 15 कृषकों के खेतों पर अनुसंशित

तकनीक का प्रदर्शन क्रियान्वित किये गये। प्रदर्शन अन्तर्गत उन्नत किस्म पंत उड़द-31 बिबेरिया बेसियाना, राइजोबियम, पी.एस.बी. स्यूडोमोनास, नींदानाशक आदि सामग्री निःशुल्क कृषकों को प्रदाय की गई। उड़द की बुवाई कतार विधि से कराई गई। अरहर का 50 एकड़ में सिद्धपुर, हरदी एवं रामपुर गांव में 39 कृषकों के खेतों पर अनुशंसित तकनीक का प्रदर्शन क्रियान्वित किये गये। प्रदर्शन अन्तर्गत उन्नत किस्म टी.जे.टी. 501 बिबेरिया बेसियाना राइजोबियम, पी.एस.बी. स्यूडोमोनास, नींदानाशक आदि सामग्री निःशुल्क कृषकों को प्रदाय की गई। अरहर की बुवाई कतार विधि से कराई गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा

तीन दिवसीय उद्यानिकी रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

केंद्र में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन प्रोफेसर एस.के. पाण्डेय, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, रीवा ने किया और अपने उद्बोधन में कहा कि फलों के उत्पादन में नई-नई तकनीकों का प्रसार एवं प्रयोग करके गुणवत्ता में सुधार लाने की आवश्यकता है। केंद्र से नई तकनीकों के सीखने के बाद कृषि से व्यवसायिक रूप दे तो उन्हें अधिक से अधिक लाभ होगा। कार्यक्रम प्रभारी डॉ राजेश सिंह ने बताया कि इन 3 दिनों में प्रशिक्षकों को आम, अमरूद, नींबू, जामुन, कटहल एवं आंवला को लगाने एवं पौधों को तैयार करने के लिए विभिन्न विधियों जैसे कलम ग्राफ्ट एवं बीज कैसे तैयार करें इस विषय पर चर्चा की गई। डॉ. अखिलेश कुमार, डॉ बृजेश तिवारी, डॉ. निर्मला सिंह, डॉ. सी.जे. सिंह, डॉ. ए.के. पटेल, डॉ. किन्जल्क सी. सिंह, डॉ. स्मिता सिंह, डॉ. के.एस. बघेल, डॉ. संजय सिंह एवं श्री एम. के. मिश्रा के साथ प्रगतिशील कृषक प्रशिक्षण में उपस्थित हुए ।

क्लस्टर प्रदर्शन के तहत प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

केंद्र द्वारा खरीफ 2018 में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत

दलहन तिलहन के क्लस्टर प्रदर्शन का आयोजन किया गया जिसमें दलहन के अंतर्गत उड़द 30 हे. (किस्म यू.एच. 1) एवं अरहर 20 हे. (किस्म टी.जे.टी. 501) जबकि तिलहन के अंतर्गत सोयाबीन 30 हे. (किस्म आर.वी.एस. 2001-4 एवं जे.एस. 2069 का प्रदर्शन आयोजित किया गया। जिले के ग्राम पड़िया, तमरा, सिझवार, खैरा मागुरहाई, रीठी, कनौजा, डेल्ही एवं खोजवा में कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा प्रदर्शन डाले गए। ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर के संयुक्त संचालक विस्तार सेवाएं डा. दिनकर प्रसाद शर्मा ने दो दिवसीय दौरा किया, जिसमें ग्राम पड़िया में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया । कार्यक्रम के दौरान डॉ. अजय कुमार पान्डेय, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. निर्मला सिंह, डॉ. सी.जे. सिंह, डॉ. के.सी. सिंह, डा. अखिलेश पटेल, डॉ. बृजेश तिवारी, डॉ. संजय सिंह, डॉ. केवल सिंह बघेल, डॉ. स्मिता सिंह, श्री एम.के. मिश्रा एवं श्री भीरेन्द्र कुमार उपस्थित रहे।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सागर

पौध संरक्षण पर स्टॉफ प्रशिक्षण/कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 27 जुलाई, 2018 को केन्द्र, द्वारा खरीफ फसलों में लगने वाले रोग कीट और उनके रोकथाम हेतु समन्वित नियंत्रण पर स्टॉफ प्रशिक्षण का आयोजन केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. के.एस. यादव के मार्गदर्शन में किया गया। उन्होंने कृषकों की आय दुगुनी करने में सहायक उन्नत कृषि तकनीकी तथा फल पौधरोपण के महत्व तथा विधि पर प्रकाश डाला। डॉ. एम.पी. दुबे, प्रमुख वैज्ञानिक-सस्य विज्ञान ने खरीफ फसलों के प्रमुख नींदा की पहचान कर उनके नियंत्रण हेतु रासायनिक नींदा नाशी के साथ-साथ यांत्रिक विधि को भी अपनाने की सलाह दी। सोयाबीन की फसल में सकरी व चौड़ी पत्ती के खरपतवारों की रोकथाम हेतु पूर्व मिश्रित खरपतवारनाशी इमिजाथाइपर 35: इमिजामोक्स 35: की 100 ग्राम अथवा फ्लूजिफॉफब्यूटाइल 11.1: फोमेक्साफेन 11.1: की 1 लीटर मात्रा 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. छिड़काव की जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. आशीष त्रिपाठी, वैज्ञानिक-पौध संरक्षण ने खरीफ फसलों में लगने वाले कीट तथा रोगों की पहचान कर नियंत्रण की जानकारी दी। द्वितीय सत्र में कृषि संबंधी शंकाओं का समाधान किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिले के विभिन्न विकासखण्डों से 35 ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों ने भाग लिया।

स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा मनाया गया

दिनांक 15 सितम्बर से 02 अक्टूबर 2018 तक स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र, सागर द्वारा वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. के.एस. यादव के मार्गदर्शन में स्वच्छता पखवाडें में 11 विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसमें प्रमुख रूप से जागरूकता कार्यक्रम, कम्पोस्ट निर्माण तथा साफ-सफाई के महत्व पर प्रकाश डाला। उक्त कार्यक्रम में लगभग 450 लोगों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सिवनी

मुनगा वृक्षारोपण पर प्रशिक्षण

केन्द्र में मुनगा वृक्षारोपण पर कार्यशाला का आयोजन दिनाँक 4 जुलाई 2018 को महिला एवं बाल विकास विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ कृषि

विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, श्री ए.पी. भंडारकर एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमति लक्ष्मी धुर्वे द्वारा किया गया एवं मुनगा के हमारे जीवन में लाभ पर प्रकाश डाला। डॉ. डी.सी. श्रीवास्तव, खाद्य वैज्ञानिक द्वारा मुनगा का वृक्षारोपण कैसे करें तथा मुनगा का खाद्य पदार्थो में कैसे उपयोग करें इसकी जानकारी आये हुए पर्यवेक्षकों को प्रदान की गई। मुनगे की नई किस्म पी.के.एम.-1 एवं पी.के.एम.-2 कोयेंबटूर-1 प्रचलित किस्में हैं । मुनगा में प्रचुर मात्रा में पोषक तत्व विटामिन सी एवं लवण मौजूद होते हैं , जो हमारे शरीर में इसकी कमी को पूरा करते हैं इस कार्यक्रम में डॉ. के.के. देशमुख एवं केंद्र के समस्त वैज्ञानिकों द्वारा बहुमूल्य जानकारी प्रदान की।

जैविक वृक्ष खेती एवं जैव उर्वरक प्रशिक्षण

केंद्र में दिनाँक 23 अगस्त, 2018 को वानिकी विभाग के सहयोग से जैविक वृक्ष खेती एवं जैव उर्वरक प्रशिक्षण रखा गया जिसके अंतर्गत वन विभाग के 46 अधिकारियों ने भाग लिया। कृषि विज्ञान केंद्र के श्री ए.पी. भंडारकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख तथा प्रमुख संरक्षक वन विभाग सिवनी द्वारा द्वीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। डॉ. के.के. देशमुख वैज्ञानिक, मृदा विज्ञान के द्वारा जैव उर्वरक उपयोग, कार्बनिक खादें एवं मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन पर व्याख्यान दिया गया। डॉ. एन.के. सिंह वैज्ञानिक, उद्यानिकी द्वारा जैविक खेती पर प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षणार्थियों का प्रक्षेत्र भ्रमण एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण डॉ. के.के. देशमुख द्वारा किया गया।

कृषि विज्ञान केंद्र, सिवनी द्वारा डिंडौरी के किसानों को प्रक्षेत्र भ्रमण

दिनाँक 26 सितम्बर 2018 को कृषि विज्ञान केंद्र, सिवनी के सभागार में डिंडौरी से आये हुये किसानों को जानकारियाँ प्रदान की गई विशेष रूप से वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख श्री ए.पी. भण्डारकर ने किसानों को खरीफ एवं रबी फसल में बीजोपचार एवं उनसे

होने वाले लाभ एवं अधिक पैदावार की जानकारी प्रदान की गई। डॉ. एन.के. सिंह, वैज्ञानिक द्वारा किसानों को जैविक खेती के तरीके एवं उनसे मिलने वाले लाभ के बारे में बताया।

किसानों के भ्रमण दल को पूरे कृषि विज्ञान केंद्र प्रक्षेत्र पर लगी फसलों का भ्रमण कर उनके बारे में जानकारी प्रदान की गई। किसान भाईयों को कृषि विज्ञान केंद्र, सिवनी में मेड नाली पद्धति में लगी अरहर फसल, सोयाबीन में अधिक उत्पादन एवं फसल संग्रहालय में लगी विभिन्न नई एवं उन्नत किस्मों की जानकारी प्रदान की गई ।

कृषि विज्ञान केन्द्र, शहडोल

पोषण माह

पोषण माह के अंतर्गत दिनाँक 17 सितम्बर 2018 को स्वयं सहायता समुह की महिलाओं को राष्ट्रीय आजीविका मिशन के प्रशिक्षण केन्द्र में केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. अल्पना शर्मा द्वारा पोषण आहार तथा स्थानीय उपलब्ध पोषण सामग्री के बारे में व्याख्यान दिया।

समन्वित रबी फसलों के प्रबंधन पर प्रशिक्षण

केन्द्र द्वारा दिनाँक 20 सितम्बर 2018 को समन्वित रबी फसलों के प्रबंधन पर कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा फसलों एवं किस्मों के चुनाव मृदा परीक्षण तथा

फसल की बुआई से कटाई तक की तकनीकी गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी जिससे किसानों को अधिक लाभ प्राप्त हो। प्रशिक्षण में श्री पी.एन. त्रिपाठी, वैज्ञानिक, इंजी. दीपक चौहान का सहयोग रहा।

रावे के छात्रों का वैज्ञानिकों से संवाद

6 जुलाई 2018 को कृषि विज्ञान केन्द्र, शहडोल में रावे के छात्रों को वरिष्ठ वैज्ञानिक सह प्रमुख एवं अन्य वैज्ञानिकों द्वारा रावे के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी तथा जिले की ग्रामीण स्थिति एवं वर्तमान में किसानों द्वारा कृषि में अपनाई गई तकनीकों के बारे विस्तार रूप से जानकारी दी गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सीधी

स्वच्छता दिवस

केन्द्र में माह जुलाई 2018 से सितम्बर 2018 तक स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम मनाया गया। इस अवसर पर केन्द्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा रावे छात्राओं द्वारा बढ़-चढ कर हिस्सा लिया गया तथा यह कार्यक्रम कृषि विज्ञान केन्द्र एवं विभिन्न ग्रामों जैसे जमोडी, डैनिहा, मधुरी, रामपुर, पटेहरा, तथा जोगीपुर में मनाया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. अल्का सिंह, डॉ. धनंजय सिंह, डॉ. ए.के. चौबे आदि वैज्ञानिकों ने प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री एम.एस. बघेल के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण दिया ।

क्लस्टर प्रदर्षन के तहत कृषक प्रशिक्षण सम्पन्न

कृषि विज्ञान केन्द्र, सीधी द्वारा खरीफ 2018 में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत दलहन फसलों के क्लस्टर प्रदर्शन हेतु 30 हेक्टेयर में 75 कृषकों के यहाँ प्रदर्शन डाले । दिनांक 15-16 जुलाई 2018 को क्रमशः कृषि विज्ञान केन्द्र कार्यालय, ओवरहा, गोपालपुर, ममदर, मझियार, बैरिहा एवं जोगीपुर में प्रशिक्षण दिया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, सीधी के प्रमुख प्रो. महेन्द्र सिंह बघेल के मार्गदर्शन में केन्द्र के सस्य वैज्ञानिक डा. धनंजय सिंह द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। केन्द्र के प्रमुख प्रो. एम.एस. बघेल द्वारा बताया गया कि दलहन का उत्पादन कम होने के कारण यह कार्यक्रम आयोजन किया जा रहा है, अतः किसान भाई दलहन की बुवाई लाइन से एवं उचित देखभाल से करें, ताकि दलहन का उत्पादन बढाया जा सके। डा. धनंजय सिंह द्वारा प्रशिक्षण में बताया गया कि कतार पद्धति एवं रिज फरो में बुवाई करने से दलहन के उत्पादन को बढाया जा सकता है। इस पद्धति में वर्षा के कम एवं अधिक होने से यानी दोनो परिस्थितियों में फसल के उत्पादन पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है। प्रशिक्षण के दौरान ट्राइकोडरमा से भूमि का उपचार करने से अरहर में लगने वाले ओइढा (एक-एक पौधे के सूखने की समस्या) एवं राइजोवियम तथा पी.एस.बी. कल्चर द्वारा बीज उपचार करने से फसल द्वारा अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है। प्रशिक्षण में खरपतवार प्रबंधन एवं कीट प्रबंधन की विस्तार से जानकारी दी गयी। डॉ. अलका सिंह, गृह वैज्ञानिक ने बताया कि यदि फसल की उन्नत बीज एवं उन्नतशील

किस्म का प्रयोग किया जाय तो उत्पादन बढ़ाया जा सकता है साथ ही किसान भाईयों को अपने घर में किचन गार्डन की विस्तार से जानकारी दी गयी । किचन गार्डन अपनाने से हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा, शुद्व एवं स्वच्छ सब्जी पूरे परिवार को साल भर मिलती रहेगी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सिंगरौली

कृषि कल्याण अभियान

नीति आयोग, भारत सरकार द्वारा देश के 112 चयनित आकांक्षी जिलों में शामिल सिंगरौली में कृषि विज्ञान केन्द्र के नेतृत्व में दिनांक 1 जून से 15 अगस्त 2018 तक किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, पशु पालन एवं पशु चिकित्सा सेवायें, उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण के समन्वय से कृषि कल्याण अभियान जिले के 25 चयनित गाँवो में सफल संपादन किया गया। प्रत्येक चयनित गाँव के 100-100 कृषकों को 5-5 फल वृक्ष तथा उन्नत प्रजाति के बीजों का तिल, अरहर एवं धान के मिनी कीट 4212 कृषकों को प्रदाय किये जाने के साथ-साथ 8029 मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण कराया गया। चयनित गाँवो में कृषि यन्त्रीकरण को बढ़ावा देने के लिए नेपशेक स्प्रेयर, बिनोवर, चैफ कटर, दरातीदार हंसियाँ का वितरण 517 कृषकों को किया गया।

केन्द्र द्वारा चयनित गाँवों के कृषकों की आय वृद्धि एवं क्षमता संर्वधन हेतु प्रत्येक चयनित गाँव के 1268 कृषकों को मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, गृह वाटिका, मुर्गी पालन,

दुग्धोत्पादन, बकरी पालन, खरीफ की अनाज वाली फसलों, समन्वित रोग एवं कीट प्रबन्धन, समन्वित पशु प्रबन्धन, मृदा स्वास्थ्य प्रबन्धन, वर्मी कम्पोस्ट इत्यादि विषयों पर 119 प्रशिक्षणों के द्वारा 1378 कृषकों को प्रशिक्षित किया गया।

जैविक खेती को बढ़ावा देने, मृदा स्वास्थ्य में सुधार तथा रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता को कम करने हेतु प्रत्येक चयनित गाँव में 20-20 कृषकों के यहाँ 6'×4'×3' फीट आकार का नोडप/वर्मी काम्पोस्ट का निर्माण कराया गया। तथा 1000 कृषकों का जैव कचरा अपघटक प्रदाय कर प्रयोग विधि की समझाइश दी गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सिंगरौली, नीति आयोग द्वारा निर्धारित लक्ष्य को शत प्रतिशत प्राप्त कर नीति आयोग द्वारा जारी 112 आकांक्षी जिलों की वरीयता सूची मे 14 जिलो के साथ संयुक्त रुप से प्रथम स्थान पर है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़

वृक्षारोपण कार्यक्रम

दिनांक 28 अगस्त, 2018 को द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया जिसके मुख्य अतिथि श्री पर्वत लाल अहिरवार, जिला पंचायत अध्यक्ष, विशिष्ठ अतिथि डॉ. ए.के. सारावगी, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एच.एस. राय, डॉ. आर.के. प्रजापति, डॉ. एस.के. खरे एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा

दिनांक 31 अगस्त, 2018 को आत्मा परियोजनान्तर्गत कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा आयोजित की गयी, जिसमें लगभग 85 कृषक और 11 कृषि वैज्ञानिक व कृषि अधिकारी सम्मलित हुये। इस परिचर्चा में कृषकों की आय वृद्धि हेतु मशरूम उत्पादन,

मधुमक्खी पालन, मुर्गी पालन, दुग्धोत्पादन, बकरी पालन आदि पर चर्चा की गई ।

कृषि विज्ञान केन्द्र, उमरिया

तकनीकी सप्ताह का आयोजन

केन्द्र द्वारा तकनीकी सप्ताह के अंतर्गत सेटेलाइट गांव ताली में कृषको की आय दुगुनी करने हेतु तीन कृषको के यहां निर्मित

तालाबों में मछली बीज प्रजाति कतला, रोहू, एवं मृगला मछली के बीज गांव में तालाबों में डाला गया, जिससे की कृषक मछली की खेती कर अतिरिक्त लाभ ले सकें।

कृषकों की आय दुगुना करने हेतु मधुमक्खी पालन पर व्यावसायिक प्रशिक्षण

केन्द्र द्वारा जिला आदिवासी एवं जंगल बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण कृषकों को अतिरिक्त आय के रूप में साधन हेतु जिले के कृषकों को मधुमक्खी पालन पर 5 दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें जिले के विभिन्न ग्रामों के 30 युवा कृषकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रशिक्षण में केन्द्र प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. के.पी. तिवारी के मार्गदर्शन में वैज्ञानिक डॉ. के.वी. सहारे, डॉ. वी.के. तिवारी, डॉ. आर.आर. सिंह के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

सम्मान

केबीनेट मंत्री द्वारा डॉ. बी.एस. किरार का गणतंत्र दिवस पर सम्मान

केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख को माननीय मंत्री, म.प्र. शासन सुश्री कुसुम मेहदेले, श्री मनोज खत्री, कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक, पन्ना द्वारा गणतंत्र दिवस को जिले में उन्नत कृषि तकनीक के प्रसार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया।

रबी फसलों हेतु तकनीकी सलाह

आगामी रबी मौसम में कृषकों तक उन्नत एवं लाभकारी कृषि तकनीकी पहुँचाने हेतु हमारे कृषि विज्ञान केन्द्र तत्पर हैं ।

- कृषक भाई गेहूँ एवं चने की उन्नत अनुशंसित रोग रोधी किस्मों तथा जैविक उर्वरकों का मृदा परीक्षण के आधार पर प्रयोग एवं उन्नत बुवाई तकनीक अपनायें।
- बोनी हेतु अनुसंशित बीज दर, उचित पौध से पौध की व कतार से कतार की दूरी तथा बोनी पूर्व जवाहर राइजोबियम, जवाहर पी.एस.बी. कल्चर तथा जवाहर ट्राइकोडर्मा विरिडी से उपचारित कर बुआई करें।
- बोनी एक ही दिनांक में न कर सात से दस दिन का अंतर अवश्य रखें प्रतिकूल अवस्था होने पर फसल में नुकसान की संभावना कम होगी।
- नींदानाशक का प्रयोग बोनी के 48 घंटे के अंदर नमी युक्त भूमि में ही करें।
- भूमि शोधन हेतु ग्रीष्म काल में गहरी जुताई के साथ फसल चक्र अपनाने से भूमिजनित फँफूदों से होने वाले रोगों से कम हानि होगी।
- किसान जिन खेतों में दलहनी फसल लगातार तीन वर्षों से ले

रहे हैं, वहां की भूमि में 2 कि.ग्रा. ट्राइकोडर्मा को 100 कि.ग्रा. पकी गोबर की खाद में मिलाकर 10 दिन के लिये त्रिपाल से ढ़क दें, तत्पश्चात बोनी पूर्व नमी युक्त भूमि में भुरकाव करें। ऐसा करने से भूमि जनित रोग नहीं लगेगा।

- चना फसल को इल्ली से बचाने के लिये 50 टी आकार की खूँटी प्रति हे. पक्षियों के बैठने हेतु लगायें तथा खेत के चारों ओर गेंदे के फूल की खेती करें।
- धान की कटाई उपरांत खाली हुये खेत में पुन: चने की तापरोधी, देरी से बोनी हेतु उपयुक्त किस्म जे.जी. 14 दिसंबर के अंतिम सप्ताह से जनवरी मध्य तक बोनी करें।
- गेहूँ में प्रथम सिंचाई शीर्ष जड़ निकलने की अवस्था पर एवं नत्रजन उर्वरक की शेष मात्रा की आधी सिंचाई के तुरंत बाद दें।
- चने की फसल में सिंचाई उपलब्ध हो तो प्रथम सिंचाई 40-50 दिन पर करें।
- बरसीम, जई एवं चरी फसलों की सिंचाई करें। जई फसल में पहली सिंचाई बोनी के 20-25 दिन पर करें तथा सिंचाई के बाद नत्रजन उर्वरक का उपयोग करें।
- रबी मौसम की सब्जियों की नर्सरी में तैयार पौध को ट्राईकोडर्मा विरिडी से उपचारित कर खेत में लगाएं ।
- सरसों, गेहूँ की फसल में प्रथम पानी के साथ 20-25 किलो यूरिया दें तथा आलू में मिट्टी चढाने से पूर्व नत्रजन युक्त खाद डालें।

बहुस्तरीय फसल प्रणाली अपनाकर आमदनी बढ़ायें

- पारंपरिक खेती से लागत चार गुना कम आती है, जबकि बहुस्तरीय फसल प्रणाली में आठ गुना मुनाफा अधिक होता है एवं फसल की गुणवत्ता उच्च स्तर की रहती है।
- एक फसल से दूसरी फसल को पोषक तत्व प्राप्त हो जाते हैं। इस प्रणाली में खरपतवार तथा कीट पतंगों का प्रकोप बहुत कम होते हैं।
- बहुस्तरीय फसल प्रणाली में एक फसल में डाली गई खाद से चार फसलें ली जा सकती हैं इस प्रकार एक एकड़ में एक वर्ष में पांच से छ: लाख रूपये की बचत होती है।
- बहुस्तरीय फसल प्रणाली कृषक फरवरी माह से प्रारंभ कर सकते हैं। इस प्रणाली में मण्डप बनाने में लगभग 1.25 लाख रूपये का खर्च आता है एवं यह मण्डप पांच साल तक चलता है अर्थात एक साल की लागत मात्र 25 हजार रूपये आती है ।
- इस फसल प्रणाली में अदरक, चौलाई, पपीता, करेला, कुंदरू आदि फसलों के अतिरिक्त और अन्य फसलें जैसे- मेथी, पालक, करेला, परवल, पड़ोरा आदि भी सफलतापूर्वक ली जा सकती हैं ।
- भूमि के अनुसार हम क्षेत्र की मांग के अनुरूप सब्जी या फल लगा सकते हैं जैसे कि हल्की भूमि हेतु चार स्तर में आधार फसल आँवला, पूरन फसल पपीता एवं अंर्तवर्तीय फसल अदरक/हल्दी, लोविया/भिण्डी का उत्पादन लिया जा सकता है।

बुक-पोस्ट
मुदित सामग्री

प्रेषक :
संचालनालय विस्तार सेवायें
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय
अधारताल, जबलपुर (म.प्र.) 482004, भारत
Telefax: 0761-2681710
E-mail: desjnau@rediffmail.com
www.jnkvv.org

प्रति, _____